चंगाई की एक घटना
(3:1–11)

हमें नहीं मालूम कि पिन्तेकुस्त के दिन को बीते अब तक कितना समय हो चुका होगा। हो सकता है कि लूका द्वारा अध्याय 2 में बताए गए आरम्भिक कलीसिया के कामों के संक्षिप्त विवरण को पूरा होने में दिन, हफ़्ते, या महीने लग गए हों। अब कहानी चंगाई के एक आश्चर्यजनक वृत्तान्त के साथ आगे बढ़ती है। प्रेरितों 2 में लूका ने संकेत दिया था कि ''बहुत से अद्‌भुत काम और चिह्न प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे'' (आयत 43)। उन आश्चर्यकर्मों में से एक का वर्णन प्रेरितों 3 में है– स्पष्टत: इसे यहूदी अगुओं पर पड़े इसके विपरीत प्रभाव के कारण दर्ज किया गया। अब तक, मसीहियों से ''सब लोग ... प्रसन्न थे'' (2:47)। यहां आकर स्थिति बदल गई। यीशु ने यूहन्ना 15:20 में जिस कष्ट की भविष्यवाणी की थी, वह आरम्भ हो गया।

सहायता करने वाले (3:1)

अध्याय 3 के आरम्भ में, ''पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर (लगभग 3 बजे अपराह्न) प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे'' (आयत 1)। पतरस और यूहन्ना इकट्ठे मछलियां पकड़ा करते थे (लूका 5:10), फिर यीशु के पीछे हो लिए और अन्त में यीशु के चेले बनकर उसके बहुत निकट हो गए (मत्ती 17:1)। उन्होंने अन्तिम फसह के पर्व की तैयारी के लिए मिलकर काम किया था (लूका 22:8); वे इकट्ठे ही खाली कब्र को देखने के लिए दौड़े थे (यूहन्ना 20:3, 4)। अब ये दोनों मित्र इकट्ठे मन्दिर की ओर जा रहे थे।

अधिकतर टीकाकारों का मानना है कि पतरस और यूहन्ना ''प्रार्थना के समय'' गए, इसलिए वे प्रार्थना करने के विशेष उद्देश्य से वहां जा रहे थे। ऐसा भी हो सकता है; परन्तु, धर्मशास्त्र ऐसा कोई निष्कर्ष निकालने को मजबूर नहीं करता।[1] प्रेरित और अन्य मसीही प्रतिदिन मन्दिर में (2:46)– अन्यजातियों के प्रांगण में इकट्ठे होते थे (5:12)– क्योंकि (1) उन सब के इकट्ठा होने के लिए नगर में केवल वही एक बड़ा स्थान था,[2] और (2) जिन लोगों को यीशु के बारे में बताना था, वे केवल यहीं मिलते थे। यह फैसला करने के लिए कि इस अवसर पर पतरस और यूहन्ना मन्दिर में क्यों गए, हमें यह पूछना चाहिए कि वहां जाकर उन्होंने क्या किया। उन्होंने एक आदमी को चंगा किया, जिससे उन्हें यीशु का प्रचार करने का अवसर मिल गया। पतरस और यूहन्ना का मन्दिर में जाने का उद्देश्य सम्भवत: लोगों को बताना था कि यीशु ही मसीह है (देखिए 5:20, 21)।

यदि उनका मुज़्य उद्देश्य यही था, तो वे "तीसरे पहर प्रार्थना के समय" ही क्यों गए? उन्होंने यह समय इसलिए चुना क्योंकि वे जानते थे कि उस समय मन्दिर में बहुत से लोग इकट्ठे हुए होंगे। यहूदी लोग, दिन में तीन बार, स्त्रियों के आंगन में[3] प्रार्थना के लिए इकट्ठे होते थे।[4] उन तीन बार में एक अपराह्न तीन बजे (दोपहर) का समय था।

असहाय (3:2)

जब पतरस और यूहन्ना मन्दिर की ओर जा रहे थे, तो कोई और भी पहले से ही वहां था, जिसका हर दिन और हर पल मन्दिर के प्रांगण में ही अर्थात आराधना के लिए नहीं, बल्कि जीवित रहने के लिए बीतता था।

> और लोग एक जन्म के लंगड़े को ला रहे थे, जिसको वे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहलाता है, बैठा देते थे; कि वह मन्दिर में जाने वालों से[5] भीख मांगे[6] (आयत 2)।

"मन्दिर" शब्द पूरे भवन या उसके किसी भाग के लिए प्रयुक्त होता था। इसलिए हम निश्चित तौर पर यह नहीं बता सकते कि इस व्यक्ति को कहां बिठाया गया था। सही अर्थ में, प्रांगण के मध्य केवल पवित्र इमारत को ही, जिसमें पवित्र स्थान और पवित्रतम स्थान था – मन्दिर कहा जाता था। परन्तु, आमतौर पर मन्दिर की परिधि के पवित्र भाग, जिसमें स्त्रियों का और इस्राएलियों का आंगन था, को ही मन्दिर कहा जाता था। फिर, सज़्पूर्ण इमारत को मन्दिर कहना असामान्य नहीं था, जिसमें अन्यजातियों का आंगन भी था। सज़्भवत: यहां पर मन्दिर के पवित्र प्रांगण की ही बात है, और उस भिखारी को स्त्रियों के आंगन के प्रवेशद्वार पर "सुन्दर" नामक फाटक के पास बिठाया गया था, जहां लोग प्रार्थना के लिए इकट्ठे होते थे।[7]

प्राचीन अधिकारियों के अनुसार, मन्दिर के पवित्र भाग में जाने के लिए नौ द्वार थे। इसमें से आठ तो 45 फुट लज़्बे थे; एक, जो कि स्त्रियों के आंगन का मुज़्य द्वार था, वह 75 फुट लज़्बा था। कुछ प्राचीन लेखों में इसे निकानोर द्वार कहा गया है, जिसे कुरिन्थी कांस्य से बनाया गया था। एफ. एफ. ब्रूस ने जोसेफस को उद्धृत करते हुए बताया कि इसे कला का इतना बेहतरीन नमूना माना जाता था कि "उसका मूल्य सोने और चांदी के बने द्वारों से भी कहीं अधिक था।" यह द्वार पूर्व की ओर था; सुबह के सूर्य की पहली किरणें कांस्य पर पड़कर इसकी चमक को और बढ़ा देती थीं। बहुत से विद्वानों का मत है कि इसी द्वार को "सुन्दर" कहा जाता था।

इस द्वार के पास एक आदमी बैठा था "जो जन्म से लंगड़ा था।" जन्म के समय उस आदमी के पैर और घुटने पूरी तरह विकसित नहीं हुए थे।[8] चलना तो दूर, वह खड़ा भी नहीं हो सकता था। उन दिनों आज के जैसी चिकित्सा तकनीक नहीं थी। यदि कोई लंगड़ा पैदा होता, तो वह पूरी उम्र ही लंगड़ा रहता था। और, यदि कोई चल न सके, तो वह काम भी

नहीं कर सकता था।[9]

इस कहानी का महत्व जानने के लिए, आपको इस आदमी को अपने मन में उतारकर *देखना* चाहिए। वह ''चालीस वर्ष से अधिक आयु का था'' (4:22); सम्भवतः वह पचास या साठ का दिखाई देता होगा। उसकी टांगों की तरफ देखिए, जिनका उसने अपनी चालीस वर्ष की उम्र तक कभी उपयोग नहीं किया था। उसकी मांसपेशियां अविकसित होंगी; उसकी टांगें उस सिकुड़ी हुई चमड़ी से कुछ मोटी होंगी जिसने उसकी सूखी हड्डियों को ढांप कर रखा था। आज की तरह, तब भी सहानुभूति पाने के लिए भिखारी लोग अक्सर अपनी विकलांगता का प्रदर्शन बड़ी निपुणता से करते थे। इस आदमी ने भी फटे-पुराने कपड़े पहने होंगे जिससे कि उधर से गुज़रने वालों की नज़र उसकी सूखी हुई टांगों पर पड़ सके।

यह कोई संयोग नहीं था कि पतरस और यूहन्ना ने इस विशेष दिन पर इसी आदमी को चंगा किया। उसका चंगा होना प्रेरितों की उसके प्रति भावानात्मक सहानुजूति नहीं था। पतरस और यूहन्ना इस आदमी के पास से सैकड़ों बार गुज़रे होंगे; कई अवसर ऐसे भी आए होंगे जब वे उसे पहले भी चंगा कर सकते थे। उस भिखारी को (उस इलाके में भिखारियों की भरमार थी) इस विशेष अवसर पर चंगा करने के कुछ विशेष कारण थे: (1) वह वहां पर इतनी देर से रह रहा था कि हर कोई उसे जानता था (3:10, 16)। (2) उसका दुख ऐसा था कि उसके चंगा होने पर कोई भी इन्कार नहीं कर सकता था कि यह सचमुच आश्चर्यकर्म हुआ था (4:16)। (3) इतनी जल्दी भीड़ को इकट्ठा करके समझाने के लिए कि यीशु ही मसीह है, कोई और ढंग नहीं था।[10]

इसमें कोई संदेह नहीं, कि उस भिखारी के लिए आज का दिन भी दूसरे हज़ारों दिनों की तरह ही आरम्भ हुआ था। दिन के लिए तैयारी करना उसके लिए कोई कठिन नहीं था, वह सुबह जल्दी उठ गया था[11] और उसने पेट में भूख की पीड़ा को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश करते हुए पुराने से पुराने, गंदे से गंदे बदबूदार चीथड़े पहने होंगे।[12] उसने पैसों की थैली और सूखी हुई रोटी का टुकड़ा अपने कुर्ते में डालकर ज़मीन से कुछ मिट्टी उठाकर अपने मुंह, टांगों पर व हाथों के पीछे मल ली होगी।[13] अभी उसने अपना यह काम पूरा ही किया था कि उसे मन्दिर के पास बिठाने के लिए आदमी आ गए।[14] उसे तंग गलियों में से घसीटते हुए अन्यजातियों के भीड़ भाड़ वाले आंगन में ले गए व उसे उसके नियत स्थान पर बिठाकर वे चल दिए। उसने अपनी कुरूप सी टांगों को अधिक से अधिक प्रभावशाली दिखाने के लिए संवारा, अपने चेहरे को और तरसयोग्य बनाया, गन्दा सा हाथ बाहर निकाला, और चिल्लाना शुरू कर दिया, ''गरीब को दान दे बाबा, गरीब को दान दे।'' अन्य आशाहीन दिनों की तरह ही उसके लिए यह दिन भी निराशा भरा था। उसे पता नहीं होगा कि यह दिन अन्य सभी दिनों से अलग होगा, क्योंकि उसने शीघ्र ही प्रभु यीशु की योजना तथा उद्देश्य में शामिल हो जाना था।

आशावान (3:3-6क)

शाम की कुर्बानी का समय था। भिखारी के कुर्ते के अन्दर पैसों की फटी थैली अभी

भी हल्की थी।[15] यदि प्रार्थना के लिए आने वालों में से कोई उस पर दया न करे, तो एक और लम्बी रात उसे भूखा ही सोना पड़ेगा।[16] दो आदमी जो जाने-पहचाने से लग रहे थे, कुछ निकट पहुंचे, और "जब उसने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उनसे भीख मांगी" (3:3)। फिर वहां कुछ असामान्य सी बात हुई, "पतरस ने यूहन्ना के साथ उसकी ओर ध्यान से देखकर कहा 'हमारी ओर देख!' " (आयत 4)। आमतौर पर वहां से गुज़रने वाले उस आदमी को नहीं देखते थे; वे उस ओर नज़र तो डालते होंगे, किन्तु इससे अधिक नहीं। यहां तक कि भीख देने वाले अधिक देर नहीं लगाते थे; वे जल्दी से छोटा सिक्का उसकी हथेली पर थमाते और चल देते थे। इस कारण, वह भी वहां से गुज़रने वालों को नहीं देखता था। उसकी बेचैन आंखें किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में रहती थीं जो किसी प्रकार उसकी सहायता करने वाला हो। परन्तु, इन दो आदमियों ने उसके सामने खड़े होकर उसे बड़े ध्यान से देखा। उनमें से बड़े ने कहा, "हमारी ओर देख!"

"सो वह [भिखारी] उनसे कुछ पाने की आशा रखते हुए उनकी ओर ताकने लगा" (आयत 5)। उसे लग रहा होगा कि आज रात वह भूखे पेट नहीं सोएगा। परन्तु पतरस ने कहा, "चांदी और सोना तो मेरे पास है नहीं"[17] (आयत 6क)। वह भिखारी निराशा से भर गया होगा। उनके असामान्य व्यवहार से उसे आशा बन्धी थी कि वे उसे काफी दान देंगे, परन्तु अब उसे बताया गया था कि वे भी उसी की तरह निर्धन ही हैं!

ध्यान दें कि उस लंगड़े आदमी को धन मिलने की आशा थी, चंगाई मिलने की नहीं। न ही शास्त्र में कहीं यह संकेत मिलता है कि इस घटना से पूर्व उस व्यक्ति का विश्वास प्रभु यीशु पर था, कम से कम "चंगा होने का विश्वास" तो नहीं था। पतरस ने आगे के संदेश में ध्यान दिलाया कि यह आदमी "उस विश्वास के द्वारा (अर्थात यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा)" चंगा हो गया (3:16), परन्तु, जैसा कि हम देखेंगे, कि उसने चंगा होने वाले उस आदमी के विश्वास के बारे में नहीं बल्कि प्रेरितों के विश्वास के बारे में कहा था। बाद में, जब ऐसी ही परिस्थितियों में पौलुस ने एक आदमी को चंगा किया था तो, शास्त्र बताता है कि वहां चंगा होने वाले का विश्वास था (तुलना 14:9),[18] परन्तु यहां प्रेरितों 3 में ऐसा कोई कथन नहीं है। मैं इस पर इसलिए ज़ोर देता हूं क्योंकि जब तथाकथित "चंगाई देने वाले" आज किसी को चंगाई नहीं दे पाते तो, निर्विवाद रूप से वे इसका दोष चंगाई पाने की इच्छा रखने वाले पर लगाते हैं: "उसका विश्वास कम है।"[19] नये नियम में, आश्चर्यकर्म करने की योग्यता के लिए आवश्यक था कि चंगाई देने वाले का अपना विश्वास हो (मरकुस 16:17, 18), परन्तु चमत्कारिक चंगाई *पाने वाले* में विश्वास का होना आवश्यक नहीं था।[20] प्रेरितों 3 में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उस लंगड़े व्यक्ति का विश्वास था। उसे तो धन मिलने की आशा थी, चंगाई मिलने की नहीं परन्तु उसकी आशा धरी की धरी रह गई जब पतरस ने कहा, "चांदी और सोना तो मेरे पास है नहीं।"

चंगाई (3:6ख-8क)

बेशक, पतरस के पास, सब कुछ नहीं था: ''परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं ...'' (आयत 6ख)। हो सकता है कि मेरे और आपके पास चांदी और सोना न हो, परन्तु कुछ तो है जो हमारे पास हमेशा रहता है जिसे हम परमेश्वर की सेवा में इस्तेमाल कर सकते हैं, जिसमें हमारी योग्यता, समय, और शक्ति भी शामिल है। परमेश्वर कहता है कि जो कुछ हमारे ''पास है'' हम उसका इस्तेमाल करें। यहां पर, पतरस के पास चांदी और सोने से कुछ अधिक मूल्यवान था। उसने आगे कहा: ''यीशु मसीह नासरी के नाम से-चल फिर!'' चंगाई के सम्बन्ध में यीशु मसीह शब्द का इस्तेमाल यहां पहली बार किया गया है, परन्तु यह अन्तिम बार नहीं होगा।[21]

यह बात स्पष्ट समझ आ जानी चाहिए कि प्रेरित लोग वाक्य ''मसीह यीशु के नाम से'' को रहस्यमयी झाड़-फूंक के लिए इस्तेमाल नहीं करते थे।[22] ''मसीह यीशु के नाम से'' यह पुष्टि करने के लिए था कि चंगाई स्वयं यीशु मसीह ने दी है! पतरस और यूहन्ना तब वहीं मौजूद थे जब यीशु ने झोले के मारे हुए एक आदमी को चंगा होने के लिए कहा था, ''उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा'' (मरकुस 2:11)। वहां उन्होंने उस व्यक्ति की आश्चर्यचकित नज़रों को देखा था, जब वह उठा, और अपनी खाट उठाकर बाहर चला गया था। उन्हें कोई संदेह नहीं था कि यीशु में अब भी चंगा करने की शक्ति है।

निश्चय ही उस भिखारी ने यीशु के बारे में सुन रखा होगा,[23] परन्तु संभवत: उसे बिल्कुल ध्यान नहीं था कि उस विवादास्पद नाम का उसके चलने से कोई सम्बन्ध है। उसने अवश्य ही सोचा होगा कि पतरस उसके साथ मज़ाक कर रहा था। यदि वह चल सकता तो उसे बीस वर्ष तक लोगों से भीख मांगने के अपमान का कष्ट क्यों झेलना पड़ता?

जब वह आदमी नहीं हिला, तो पतरस आगे बढ़ा और, ''उसने उसका दहिना हाथ पकड़कर उसे उठाया और तुरन्त उसके पांवों और टखनों में बल आ गया''[24] (पद 7)। आने वाले वर्षों में, बेशक उस आदमी को यह याद आता होगा कि जब उसके पांवों और टखनों में, उसकी टांगों और उसके कूल्हों में बल आ रहा था तो उसे कैसा महसूस हुआ था।

एक बार फिर, वह दृश्य मैं आपके सामने *प्रस्तुत* करना चाहता हूं। आपको उसके विकृत पांव, और टखने, उसकी दुबली-पतली टांगें याद हैं? देखिए वह आपकी आंखों के सामने ही सीधी हो गई हैं और उनमें शक्ति भर आई है! परमेश्वर ने पल भर में ही उसकी हड्डियों को स्वरूप दे दिया है, उसकी मांसपेशियां और अस्थि-मांस बना दिया, खून की नसें चला दीं, मुर्दा नाड़ियों को जीवित कर दिया है, और उसके जमे हुए जोड़ों को चला दिया है! यह एक आश्चर्यकर्म था जिसे हर कोई देख सकता था। यह एक आश्चर्यकर्म था जिसे कोई नकार नहीं सकता था!

यह आश्चर्यकर्म हड्डियों और मांस को चंगा करने से कहीं बढ़कर था। जब उस भिखारी को अपने शरीर में बल आते महसूस हुआ तो उसने कुछ किया जो उसने पहले कभी नहीं किया था: ''वह उछलकर खड़ा हो गया और *चलने फिरने लगा; और कूदता* और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया'' (आयत 8)। उस आदमी का

तुरन्त चलना, उछलना, और कूदना उसी प्रकार एक आश्चर्यकर्म था जैसे उसके पांवों और टखनों में बल का आना। जब मैं छोटा था, तो मुझे चलना *सीखना* पड़ा था; इसमें कुछ समय लगा था। बाद में मैंने उछलना सीख लिया। यह आदमी जो कभी चला ही नहीं था, तुरन्त चलने *और* कूदने लग पड़ा था। किसी के पांवों या टांगों में गम्भीर चोट आ जाने पर उसे ठीक होने के बाद फिर से चलना सीखने के लिए उपचार की आवश्यकता होती है। इस भिखारी को किसी उपचार की आवश्यकता नहीं पड़ी। प्रभु ने चलने के जटिल कार्य और उससे भी जटिल कार्य कूदने के लिए उस आदमी के मन में वे सारे सिगनल लगा दिए थे जो सैकड़ों मांसपेशियों तक संदेश पहुंचा देते हैं। आश्चर्य की बात नहीं कि बाद में सभा ने कहा, ''यरूशलेम के सब रहने वालों पर प्रगट है कि इन के द्वारा एक प्रसिद्ध चिह्न दिखाया गया है; और हम उसका इन्कार नहीं कर सकते'' (4:16)!

आज कुछ लोग प्रेरितों के समान ही चंगाई देने का दावा करते हैं। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि वे कुछ खास बीमारियों को चंगा कर सकते हैं। मेडिकल डॉक्टर बताते हैं कि मूलत: बहुत सी बीमारियां मनोदैहिक (psychosomatic) होती हैं। मनोदैहिक, ''मन'' (*स्यूक*)[25] और ''देह'' (*सोमा*) के यूनानी शब्दों के मेल से बना है। किसी रोग को मनोदैहिक कहने का अर्थ यह नहीं कि ऐसी तकलीफ़ कोई रोग नहीं है, अर्थात ''यह सब दिमाग़ में ही है।'' बल्कि, मनोदैहिक रोग में यह माना जाता है कि मन और देह दोनों का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि यदि एक को तकलीफ़ हो तो दूसरे को उसका कष्ट अवश्य होता है। क्या यह सत्य नहीं कि शारीरिक रूप में बीमार होने पर हम शीघ्र ही खिन्नचित्त हो जाते हैं? क्या यह सत्य नहीं कि परेशान होने पर हमारे शरीर पर प्रभाव पड़ता है, जिससे सिरदर्द से लेकर पेटदर्द के अनेक रोग हो सकते हैं? शरीर पर मन का प्रभाव इतना गहरा है जिसका बहुतों को अहसास ही नहीं होता। मानसिक अन्धेपन, मानसिक बहरेपन, मानसिक लंगड़ेपन और यहां तक कि मानसिक लकवे तक की अधिप्रमाणित घटनाएं हैं। किसी को मनोदैहिक रोग हो जाए तो उसे कोई भी ऐसा व्यक्ति ठीक कर सकता है जो उसे यह *मना* सके कि उसमें उसे चंगा करने की शक्ति है। (इस प्रकार की चंगाई में, *चंगा होने वाले* का विश्वास होना आवश्यक है)। मैं फिर कहता हूं कि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज के तथाकथित चंगाई देने वाले कुछ खास बीमारियों को चंगा कर सकते हैं।

मुझे संदेह तब होता है जब कोई यह कहे कि वह *प्रेरितों की तरह ही चंगाई* दे सकता है। मैं बहुत सी तथाकथित ''चंगाई सभाओं'' में गया हूं और मैंने टेलीविज़न पर भी बहुतों को देखा है। मुझे उसमें ऐसा कभी कुछ नहीं मिला जो कि सुन्दर फाटक के पास होने वाली घटना से दूर तक भी मेल खाता हो। मैंने लोगों को बैसाखियां फेंकते, स्टेज पर लड़खड़ाते हुए देखा है ...मैंने लोगों को व्हीलचेयर से उठकर थोड़ा सा चलते हुए देखा है ... परन्तु मैंने अपनी आंखों के सामने किसी की (सूखी) टांगों में मांस भरते नहीं देखा ... मैंने कभी नहीं देखा कि जो व्यक्ति कभी न चला हो, वह चलने और कूदने लगा हो। इस बात को चिह्नित कर लें: कि परमेश्वर आज भी हमारे जीवनों में कार्य करता है, परन्तु कार्य करने के उसके ढंग नये नियम के दिनों से भिन्न हैं। परमेश्वर आज भी स्वस्थ होने में हमारी सहायता करता

है, परन्तु वह अब प्रकृति के नियम को वैसे भंग नहीं करता जैसे उसने लंगड़े आदमी को चंगा करते समय किया था। आज किसी के पास भी वही शक्ति नहीं है जो परमेश्वर ने प्रेरितों को दी![26]

आनन्दित व्यक्ति (3:8ख-11)

आइए अपनी कहानी की ओर चलें। चंगाई पाकर वह भिखारी अत्यंत प्रसन्न था कि जिस शक्ति की हम बात करते हैं, वह पतरस और यूहन्ना के पास *थी*। मान-मर्यादा को एक तरफ़ रखकर; वह ऐसे उछलने और कूदने लगा जैसे कि वह चालीस का पुरुष नहीं बल्कि चार वर्ष का बालक हो। आयत 8 बताती है कि वह नए मिले स्वास्थ्य के लिए ''परमेश्वर की स्तुति'' करने लगा; उसे चंगाई के सच्चे स्रोत का पता चल गया था। जब पतरस और यूहन्ना स्त्रियों के आंगन की ओर जाने लगे, तो वह भी पीछे नहीं रहा। वह ''कूदता और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उन के साथ मन्दिर में गया'' (आयत 8ख)।

प्रार्थना के लिए वहां इकट्ठे हुए लोग हक्के-बक्के रह गए होंगे। कल्पना कीजिए कि यदि अगले रविवार सुबह, आराधना के बीच; जहां आप आराधना कर रहे हों, उस हॉल में कोई व्यक्ति एक पागल की तरह उछलता, कूदता और यह चिल्लाता हुआ, कि ''परमेश्वर की महिमा हो'' अन्दर घुस जाए तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी! चंगा होकर इस भिखारी द्वारा स्त्रियों के आंगन में जाकर धमाका करने पर, अवश्य ही वहां एकत्र लोगों की भावनाएं भड़क उठी होंगी। पहले तो वे परेशान हो गए होंगे: ''इस पागल आदमी ने प्रार्थना की गम्भीरता को भंग करने का दुस्साहस कैसे किया!'' परन्तु, शीघ्र ही, उनका क्रोध आश्चर्य में बदल गया:

> सब लोगों ने उसे चलते-फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर उसको पहचान लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के सुन्दर फाटक पर बैठकर भीख मांगा करता था; और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी; वे बहुत अचम्भित और चकित हुए (आयतें 9, 10)।

आयत 11 बताती है कि वह भिखारी ''पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था।'' मैं देख सकता हूं कि उसने प्रेरितों को पकड़ा हुआ है और ऐसे चिल्ला रहा है ताकि उसको सभी लोग सुन सकें: ''मैं भीख मांगने के लिए वहीं बैठा हुआ था, जहां हर रोज़ बैठा करता था। फिर इन लोगों ने आकर मुझे उठकर चलने को कहा। फिर इस आदमी ने मुझे उठाया और परमेश्वर ने अब मुझे चंगा कर दिया है! देखो! देखो!''

जब वह हवा में ऊंचा उछलता और नीचे आता, खुशी से एक कान से दूसरे कान में बताता हुआ सबका ध्यान आकर्षित कर रहा था, तो किसी को संदेह नहीं रह गया था कि सचमुच यहां आश्चर्यकर्म हुआ था। मैं पतरस, यूहन्ना और उस भिखारी पर भीड़ के प्रश्नों की बौछार का शोर सुन सकता हूं। यहां जो कुछ हुआ था उसकी ख़बर, मन्दिर के दूसरे भागों

में भी फैल गई थी,[27] और भीड़ उमड़ पड़ी थी, जिससे स्त्रियों का आंगन खचाखच भर गया था। अन्त में पतरस ने उसका हाथ पकड़कर लोगों को अपने पीछे आने का संकेत किया। वह उन्हें अन्यजातियों के आंगन में ले गया, जहां काफ़ी जगह थी और वहां सभी उसे सुन सकते थे।[28] ''जब वह [भिखारी] पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था,[29] तो सब लोग अचम्भा करते हुए उस ओसारे में जो सुलेमान का कहलाता है,[30] उनके पास दौड़े आए'' (आयत 11)।

सुलेमान का ओसारा अन्यजातियों के आंगन की पूर्वी दीवार के अन्दर की ओर था। यह 600 फुट लम्बा और 60 फुट चौड़ा था। इसमें देवदार की लकड़ी की छत से ढकी हुई 27 फुट के ख भों की दो कतारें थीं।[31] यीशु ने वहां सेवकाई की थी (यूहन्ना 10:23), और यह जगह आरम्भिक मसीहियों के मिलने का प्रसिद्ध स्थान बन गई थी (5:12)। पतरस यहां से ज़ड़ा होकर बोल सकता था ताकि उसे लोग देख व सुन सकें।

पहले, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का संदेश लाने वालों को बताया गया था कि वे इससे जान सकते हैं कि मसीह आ चुका है, क्योंकि ''लंगड़े चलते फिरते हैं'' (तु. लूका 7:22; मत्ती 11:5)। यशायाह भविष्यवक्ता ने मसीही युग के बारे में लिखकर, कहा था कि, ''तब लंगड़ा हिरण की सी चौकड़ियां भरेगा'' (यशायाह 35:6)। सुलेमान के ओसारे में इकट्ठे हुए लोगों ने देखा कि उसकी भविष्यवाणी कितने प्रभावशाली ढंग से पूरी हुई। पतरस ने उनका ध्यान आकर्षित कर लिया था;[32] वे उसका संदेश सुनने के लिए तैयार थे।

सारांश

अगले पाठ में हम पतरस के संदेश का अध्ययन करेंगे, परन्तु अब यहीं समाप्त करते हुए हमें अपने आप पर इसे लागू करके देखना चाहिए। उस भिखारी की हालत का वर्णन करने के लिए आरम्भ में मैंने रेखाचित्र का प्रयोग किया था। आपको वह कैसा लगा? यदि आप मसीही नहीं हैं, तो ये विचार आपको चोट तो नहीं पहुंचाते, ''जिस प्रकार वह आदमी शारीरिक रूप से दु:खी था, मैं भी उसी के समान आत्मिक रूप में अपाहिज हूं?'' जिस प्रकार मैंने इस आदमी के चंगा होने का वर्णन किया, उससे आपको अहसास हुआ, कि '' 'उठ कर चल फिर' सकने के लिए, मुझे भी, प्रभु की सहायता की आवश्यकता है'' (3:26)?

उस लंगड़े आदमी की तरह ही, हम में से बहुतेरे लोग प्रभु से 'रेज़गारी' की मांग कर रहे हैं, जबकि प्रभु हमें आत्मिक *चंगाई* दे सकता है! यीशु के नाम में चंगा करने की शक्ति आज भी है। यदि आपने उसके पवित्र नाम का अंगीकार नहीं किया और उसके नाम में बपतिस्मा नहीं लिया; तो *अब* समय है, आज ही के दिन आप भी ''खुशी से उछलते हुए'' उस भिखारी की तरह परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं!

विजुअल-एड नोट्स

कई वर्ष पूर्व, मैंने विश्वास से चंगाई देने वाले एक तथाकथित व्यक्ति के यहां अपना नाम भेजा। कई महीनों तक वह मुझे ऐसी वस्तुएं भेजता रहा, जिनसे उसे दान भेजने पर मेरे स्वास्थ्य तथा सफलता में कठिनाइयां नहीं आनी थीं। अन्य उपायों के साथ, मुझे चंगाई देने वाला एक कपड़ा, चंगाई का तेल, प्रार्थना के लिए एक कालीन, और एक मोमबत्ती भेजी गई। उनमें से मेरी पसन्दीदा एक शॉवर कैप है जिस पर हाथ का रेखाचित्र छपा हुआ है। इसके साथ भेजे गए पत्र में लिखा था कि उस ''चंगाई देने वाले'' ने अपने हाथ उस कैप पर रखे हैं; और यदि मैं उसे अपने सिर पर रख लूं तो मुझे ऐसा महसूस होगा जैसे कि उस ''चंगाई देने वाले ने'' मेरे सिर पर हाथ रखा हो! मैं इन उपायों का प्रयोग इसलिए करता हूं क्योंकि मुझे प्रेरितों के काम और आज के तथाकथित ''चंगाई देने वालों'' में विषमता दिखाई देती है। आपके अपने क्षेत्र में भी ''चंगाई देने वाले'' लोग इसी प्रकार के उपायों का प्रयोग करते होंगे।

प्रवचन नोट्स

कहते हैं कि आज के तथाकथित चमत्कारों के विरुद्ध सबसे प्रभावशाली तर्क यह है कि जो कुछ आज होता है, उसकी तुलना बाइबल के आश्चर्यकर्मों से की जाए। प्रेरितों 3 ऐसा करने के लिए आपको अवसर देता है। प्रेरितों 3 अध्याय के आश्चर्यकर्मों और आज की तथाकथित चंगाइयों में विषमता दिखाने के लिए आपको इसमें दिए संदेश का प्रचार करना चाहिए। आपका पाठ 3:1-11 पर केन्द्रित रहे, परन्तु आप प्रेरितों 3 और 4 अध्याय की कुछ और आयतों के विस्तार को भी इसके साथ मिला लें (3:12, 16; 4:7-10, 14, 15, 22; इत्यादि)।

पादटिप्पणियां

[1]पिछले पाठ में ''वह कलीसिया जिसका सदस्य बनना मैं प्रिय जानूंगा'' में पाठ और पादटिप्पणियों में हमने आरम्भिक यहूदी मसीहियों के मन्दिर में आराधना करने की बात पर विचार किया था। यद्यपि यह सत्य था कि परमेश्वर ने अपनी इच्छा एक बार में प्रकट नहीं की और बहुत कुछ ऐसा था जो आरम्भिक मसीही नहीं जानते थे। तात्पर्य यह है कि पहली बातें जो प्रकट की गईं, वे ये थीं कि मसीहियों को आराधना कैसे करनी चाहिए (2:42)। प्रेरितों 2 और 3 अध्याय में हमें यह निष्कर्ष निकालने के लिए कोई बाध्य नहीं करता कि आरम्भिक मसीही यहूदी ढंग से आराधना करने में लगे रहे। हर हाल में, 70 ईस्वी में मन्दिर के विनाश से किसी भी प्रकार के बन्धन जो अभी तक थे, सब टूट गए। [2]कुछ अधिकारियों का कहना है कि मन्दिर के घेरे का क्षेत्रफल 6,00,000 वर्ग फुट था। [3]मन्दिर के प्रांगण के पवित्र भाग में स्त्रियों के आंगन, जहां प्रार्थना के लिए यहूदी पुरुष और स्त्रियां इकट्ठे हो सकते थे, का क्षेत्रफल सबसे अधिक था। यह लगभग दो सौ वर्ग फुट था (इस पाठ के आरम्भिक भाग में मन्दिर से सम्बन्धित सभी प्रकार के हवालों के लिए मन्दिर का रेखाचित्र देखिए)। [4]भजन संहिता 55:17 टिप्पणी करता है कि दाऊद ''सांझ को,

भोर को और दोपहर को'' प्रार्थना करता था। दानिय्येल ''दिन में तीन बार'' प्रार्थना करता था (दानिय्येल 6:10), जिसमें ''सांझ की अन्नबलि का समय'' (दानिय्येल 9:21) भी शामिल था। याजक दिन में दो बार मेज़े की भेंट चढ़ाते थे (निर्गमन 29:38-43), और प्रत्येक सुबह और शाम धूप भी जलाया जाता था (निर्गमन 30:1-10)। भेंट और धूप का जलाना लगभग एक ही समय होता था, और इसी समय लोग मन्दिर में प्रार्थना के लिए इकट्ठे होते थे (लूका 1:8-10)। इसका अर्थ यह नहीं कि यहूदियों के विचार से वे केवल इन्हीं समयों में प्रार्थना कर सकते थे; बल्कि, वे निर्धारित समयों में प्रार्थना करने के अलावा दूसरे समयों में प्रार्थना करना भी अच्छा मानते थे। [5]उन दिनों भीख मांगने के लिए वहां तीन प्रमुख स्थान थे: (1) धनवानों के द्वारों के निकट (लाज़र की तरह), (2) मुज्य मार्गों पर (बर्तमियुस की तरह), या (3) आराधना स्थलों के निकट (इस व्यक्ति की तरह)। दान देना यहूदी धर्म में सराहनीय कार्य माना जाता था, सो आराधना में जाने वाले या आराधना से आने वालों के मन में दान देने की इच्छा होती ही थी। [6]''भीख'' परोपकार स्वरूप दी जाने वाली सहायता को कहा जाता है। [7]भिखारी को वास्तविक मन्दिर (वह इमारत जहां पर पवित्र स्थान और परमपवित्र स्थान था) के निकट जाने की अनुमति नहीं होती होगी, और पूरे मन्दिर के प्रांगण की दीवारों के बाहर भीख मांगने के लिए कोई अच्छा स्थान नहीं होगा। दूसरी ओर, स्त्रियों के आंगन का प्रवेशद्वार भीख मांगने के लिए उत्तम स्थान होगा। [8]आयत 7 ध्यान दिलाती है कि उसकी तकलीफ़ ''उसके पांव और टखनों में'' थी। कई लोगों का विचार है कि उसकी तकलीफ़ यह थी कि उसके टखनों के जोड़ों का विकास नहीं हुआ था। [9]बुनियादी तौर पर दफ़्तरी कामों का अस्तित्व नहीं था। [10]मुझे गलत मत समझें, मैं पतरस और यूहन्ना के दया और तरस को कम नहीं आंक रहा, परन्तु वहां पर सैकड़ों अपाहिज भिखारियों को ठीक किया जा सकता था। विशेष अवसर पर इस विशेष व्यक्ति के चुने जाने का अवश्य ही कुछ विशेष कारण रहा होगा।

[11]उसे कम से कम सुबह 8:30 बजे मन्दिर में होना चाहिए था। पहली ''प्रार्थना का समय'' लगभग सुबह 9:00 बजे था। [12]वर्षों से कई भिखारी धनवान बन चुके हैं, परन्तु स्पष्टतया इस व्यक्ति के साथ ऐसी कोई बात नहीं थी। वह चंगा होकर अति प्रसन्न हुआ, जिससे यह पता चलता है कि उसके चंगा होने से उसकी जीविका कमाने का लाभदायक ढंग निष्फल नहीं हुआ। [13]भिखारी लोग कृपा पाने के लिए अपने आप को अधिक से अधिक असहाय दिखाते हैं। [14]यह नहीं बताया गया कि हर रोज़ उस लंगड़े को कौन उठाकर ले जाता था। शायद उसके मित्र ही ऐसा करते हों। हो सकता है कि कुछ लोग भिखारियों को उनके भीख मांगने के अड्डे पर पहुंचाते हों तथा दिन ढलने पर, ये लोग भिखारियों से कुछ हिस्सा वसूल करते होंगे। [15]जिस उत्सुकता से वह पतरस और यूहन्ना से दान की अपेक्षा कर रहा था उससे ऐसा लगता है। [16]भिखारी आमतौर पर कुछ बचाते नहीं थे। जितना कमाते थे, उसे वे रोज़ खर्च कर लेते थे। [17]क्योंकि प्रेरितों ने स्वयं को ''प्रार्थना में और वचन की सेवा में'' समर्पित कर दिया था (6:4), इसलिए जीविका कमाने का उनके पास समय नहीं था। वे भी उनमें ही शामिल होंगे जो अन्य सदस्यों की सहायता पर निर्भर थे (2:45)। [18]क्योंकि दो वृत्तांत एक समान हैं, यह सम्भव है कि टीकाकारों ने प्रेरितों 3 के वृत्तांत में प्रेरितों 14 के वृत्तांत के कुछ विवरण पढ़े हों। परन्तु, अलग-अलग विवरणों के साथ पूर्णतया अलग वृत्तांत हैं। [19]चमत्कारी चंगाई ढूंढते हुए निराश हो जाना, व्यक्ति के अपने विश्वास के कारण होता है। अपने कपट को छिपाने के लिए, ये धार्मिक कलाकार उन कुछ बातों से इन्कार करते हैं जिनसे वह व्यक्ति बीमार रहा और वह उसका विश्वास था। [20]आश्चर्यकर्म पाने वाले के विश्वास की बात कई बार की जाती है; कई बार नहीं। कई बार हर संकेत होता है कि आश्चर्यकर्म पाने वाले में बिल्कुल भी विश्वास *नहीं* था। दोरकास में कितना विश्वास था (प्रेरितों 9)?

[21]इस अवसर पर पतरस के आश्वासन से लग सकता है कि यह पहली बार नहीं था कि एक प्रेरित ने किसी को मसीह के नाम में चंगा किया हो परन्तु लिखी जाने वाली यह पहली घटना थी। [22]सात यहूदी ओझाओं ने ऐसा सोचने की गलती की और अन्त में उन्हें सड़क पर नंगे भागना पड़ा था (19:13-16)। [23]संभवत: वह यीशु के स्मरणीय दिनों में मन्दिर में ही रहा होगा, पिन्तेकुस्त की घटनाओं का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं। [24]डॉ. लूका हमें रोगों से सम्बन्धित विवरण दे रहा है। [25]स्यूक ''प्राण'' के

लिए साधारण यूनानी शब्द है, परन्तु इसका उपयोग ''मन'' के लिए किया जाता है जैसे कि ''मनोविज्ञान'' (psychology) (मन का अध्ययन)। [26]कइयों को लगता है, कि इस प्रकार के कथन का यह अर्थ है कि परमेश्वर में नये नियम के समयों के जैसी सामर्थ नहीं है, या हमारे पास कुछ ऐसी बात की कमी है, जो नये नियम के समयों में थी। आरम्भिक मसीहियों के प्रतिदिन के जीवन में आश्चर्यकर्मों के महत्व पर अधिक ही ज़ोर दिया गया है। आश्चर्यकर्म करने की योग्यता ने उन्हें अच्छे लोग नहीं बनाया या उन्हें स्वर्ग में जाने के लिए तैयार नहीं किया (देखिए 1 कुरिन्थियों की पत्री)। और, शारीरिक स्वास्थ्य को भी अनावश्यक महत्व दिया गया है। हम में से कोई भी बीमार होना पसन्द नहीं करेगा, परन्तु बीमारी में भी कुछ गुण हो सकता है (भजन 119:71)। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि आत्मिक स्वास्थ्य का अधिक महत्व है, शारीरिक स्वास्थ्य का नहीं। आज भी मसीहियत में हर बात *स्थायी मूल्य* रखती है। [27]यहूदी अगुओं में भी ख़बर फैल गई, जैसा कि हम 4:1-4 में देखते हैं। [28]लूका हमें ठीक-ठीक यह नहीं बताता कि हर बात कहां हुई और यह कि घटनाओं की ठीक-ठीक शृंखला क्या थी। जो दृश्य I में मिलता है वह एक सम्भावना है। [29]वेस्टर्न टैक्सट इस भाग को पढ़ने के लिए इस प्रकार विस्तार से बताता है, ''और जब पतरस और यूहन्ना बाहर आए, तो वह भी उनके साथ उन्हें पकड़े हुए बाहर आ गया।'' मैंने उस भिखारी को प्रेरितों के बिल्कुल निकट चित्रित किया है जिससे यह पता चले कि वह दूसरों को बता सकता है कि उन्होंने उसके लिए क्या किया, अन्य शब्दों में वह कृतज्ञ है। कइयों का विचार है कि यह अंधविश्वास का स्पर्श हो सकता है, उसे डर था कि यदि उन्होंने उसे छोड़ दिया तो वह अपनी पहले वाली स्थिति में आ जाएगा। ऐसा लगता नहीं, क्योंकि उसने परमेश्वर को महिमा दी उन्हें नहीं। [30]लूका इसे ''ओसारा जो सुलेमान का *कहलाता* है'' कहता है क्योंकि परम्परा के अनुसार यह सुलेमान के मूल मन्दिर का भाग था, परन्तु इसका ऐसा कोई प्रमाण नहीं था। वास्तव में, यह प्रमाण अधिक था कि ऐसा बिल्कुल नहीं था।

[31]यह अन्यजातियों के आंगन के सामने की ओर से खुला था। [32]नये नियम के समयों में चंगाई के अवसरों और आज की तथाकथित चंगाई-सभाओं में एक और भिन्नता यह है कि पहली शताब्दी में प्रेरितों को सही दिखाने के लिए और लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए *पहले* आश्चर्यकर्म हुए; *फिर* प्रेरितों ने प्रचार किया। आज, आमतौर पर पहले प्रचार होता है, जिसका मुख्य उद्देश्य शायद चंगाई सभा के लिए लोगों की भावनाओं को उकसाना होता है; *फिर* चंगाई की सभा होती है। नये नियम के समयों में, प्रचार अधिक महत्वपूर्ण था जबकि आज, लगता है कि चंगाई अधिक महत्वपूर्ण है।